संपादकीय

प्रिय पाठकों! नव वर्ष की बहुत सारी शुभकामनाएँ एवं बधाई। नव वर्ष का स्वागत हमने अत्यंत उत्साह एवं सौहार्दपूर्वक किया तथा गत वर्ष के सुखद अनुभवों का अनुसरण करते हुए, आने वाले समय को और अधिक सुखद एवं उज्ज्वल बनाने के लिए भविष्य की आशाओं के साथ नए विचारों, प्रयोगों, सिद्धांतों तथा तकनीकों आदि को उपयोग में लाने का प्रयास निरंतर रखना है। इसी शृंखला में *भारतीय आधुनिक शिक्षा* का यह अंक विद्यालयी शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा के विभिन्न सरोकारों एवं मुद्दों, नए विचारों, अनुभवों तथा शोध परिणामों आदि को लेकर आपके समक्ष आया है।

विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में उत्तरोत्तर सुधार के लिए सरकारों एवं समाज द्वारा अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। जिसमें शिक्षक की मुख्य भूमिका होती है। ऐसे में अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता तथा पेशेवर शिक्षकों की तैयारी एक महत्वपूर्ण सरोकार है। अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता पूरे देश में एवं विशेषकर पूर्वोत्तर क्षेत्र में चिंता का विषय बनी हुई है। "भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में माध्यमिक अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम – स्थिति, मुद्दे और समस्याएँ" पर किए गए शोध अध्ययन पर आधारित शोध पत्र स्कूली पाठ्यचर्या की पृष्ठभूमि पर केंद्रित है तथा अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के आयोजन में अनुभव किए गए अवरोधों के साथ-साथ पूर्वोत्तर राज्यों में विद्यमान सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा के शोध को दर्शाता है। शिक्षक शिक्षा में गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु एन.सी.टी.ई. रेग्यूलेशन – 2014 में शिक्षकों की पेशेवर तैयारी का एक मज़बूत खाका प्रस्तुत किया गया है, जिसमें शिक्षक शिक्षा की पाठ्यचर्या का अद्यतन स्वरूप देते हुए इंटर्नशिप की अवधि 20 सप्ताह (6 माह) कर दी गई है तथा इसे वर्तमान शिक्षक शिक्षा के समस्त कार्यक्रमों (कोर्सों) में कार्यान्वित किया जा रहा है। "हाँ, शिक्षक शिक्षा में 20 सप्ताह की इंटर्नशिप!" लेख के माध्यम से लेखक द्वारा शिक्षक शिक्षा संस्थानों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, विद्यार्थी-शिक्षकों, प्रधानाचार्यों, शिक्षकों एवं प्रशासकों तथा अंत में समाज की शिक्षक शिक्षा इंटर्नशिप पर समझ विकसित करने के लिए इंटर्नशिप का विश्लेषणात्मक स्वरूप प्रस्तुत किया गया है।

शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करते हुए ज्ञान को बाहरी जीवन से जोड़ने में रचनावादी उपागम की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में विद्यार्थी की सक्रिय सहभागिता शिक्षा को रुचिपूर्ण बना देती है। ऐसे में प्राथमिक स्तर पर रुचिपूर्ण पर्यावरण शिक्षा आज की आवश्यकता है। "प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा हेतु कक्षा शिक्षण और रचनावादी उपागम" नामक लेख में प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता, रचनावाद के सिद्धांतों और उनके आधार पर पर्यावरण शिक्षा हेतु कक्षा शिक्षण के स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। लेकिन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सहज एवं सरल बनाने का माध्यम कक्षा की भाषा होती है। हमें भी अपनी कक्षाओं के भीतर हिंदी भाषा शिक्षण के माध्यम से एक ऐसा माहौल बनाना होगा, जिसमें कक्षा में बैठे छोटे-बड़े बच्चों का हृदय अपनी इस राजभाषा के प्रति गौरव से भर सके। इन्हीं सरोकारों का ध्यान रखते हुए हिंदी भाषा शिक्षण की चुनौतियों एवं उनके व्यावहारिक समाधान का उल्लेख "भारत में बहुभाषिकता तथा हिंदी भाषा शिक्षण की चुनौतियाँ एवं समाधान" नामक लेख में किया गया है।

"शाला-पूर्व शिक्षा में खेल की भूमिका" नामक लेख में शिक्षा में खेल के महत्व को उद्घाटित करते हुए बताया गया है कि खेल के माध्यम से बच्चों के शारीरिक कौशल को विकसित करने एवं स्वस्थ रहने में सहायता मिलती है। खेल बच्चों को ज्ञान बढ़ाने में, निर्णय लेने में एवं मानसिक कौशल विकसित करने में सहायता करता है। खेल बच्चों में रचनात्मकता को प्रोत्साहित करता है। यदि विद्यार्थियों को अपनी कुशलता तथा स्व-अध्ययन की आदतों को मज़बूत करना है तो हमें उन्हें स्व-अधिगम सामग्री प्रदान करनी होगी। अतः कंप्यूटरीकृत स्व-अधिगम सामग्री के प्रभाव का बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों की उपलब्धि पर आधारित शोध पत्र "बी. एड. प्रशिक्षणार्थियों की गणित शिक्षण विधि विषय में उपलब्धि पर कंप्यूटरीकृत स्व-अधिगम सामग्री का प्रभाव" दिया गया है।

"नयी तालीम के केंद्र — आनंद निकेतन — एक विहंगावलोकन" नामक लेख गाँधीजी की नयी तालीम पद्धति पर आधारित आनंद निकेतन विद्यालय के अवलोकन और आख्यानों के आधार पर उद्घाटित करता है कि किस प्रकार से यहाँ शिक्षण-अधिगम की संस्कृति एक संपोषणीय परिस्थिति में सशक्त विद्यार्थी और सशक्त शिक्षकों के साथ जीवंत होती है। इसी कड़ी में "गाँधीवादी मूल्यों पर केंद्रित प्राथमिक शिक्षा" पर लेख है। इस लेख में बताया गया है कि हमें विद्यार्थियों में अहिंसा, शिष्टाचार, विनम्रता, भाईचार आदि मूल्यों का विकास करने के लिए अपने महान विचारकों, दर्शनशास्त्रियों के विचारों को अपनाना होगा। मानवीय मूल्यों के साथ-साथ विद्यार्थियों में सामाजिक मूल्यों के अंतर्गत समानता का मूल्य भी विकसित करना होगा। इन्हीं मूल्यों के आधार पर लेख, "शैक्षिक स्त्री विमर्श — तब और अब" बालिका शिक्षा पर ज़ोर डालता है। प्रस्तुत लेख में महिला-पुरुष साक्षरता दर, लिंगानुपात, बालिका के पोषण की चुनौतियाँ, शिक्षा की स्थिति, स्त्री शिक्षा के संबंध में चुनौतियाँ, स्त्री तथा स्त्रियों के विधिक अधिकारों की स्थिति एवं तत्पश्चात् स्त्री शिक्षा को सामाजिक धरातल पर प्रतिबिंबित किया गया है। इसके साथ ही लेख, "भारतीय समाज में किन्नरों की शैक्षिक एवं सामाजिक अपवंचन की दशा एवं दिशा" विस्तृत तथ्यपरक जानकारी देता है। अगला लेख "शिक्षा में तकनीकी की समझ एवं नवीन प्रयोग" राष्ट्रीय आई.सी.टी. नीति एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के शैक्षिक प्रौद्योगिकी और आई.सी.टी. पर प्रभाव की चर्चा कर शिक्षा में तकनीकी की समझ एवं नवीन प्रयोग के महत्व को सुदृढ़ एवं प्रचारित करता है। इस प्रकार, शिक्षा में तकनीकी का उपयोग समाज में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित करने में मदद करता है। इसी बात को, "वैज्ञानिक दृष्टिकोण एवं विज्ञान शिक्षा के मायने" नामक लेख में समझाने का प्रयास किया गया है। यह लेख असामाजिक कुरूतियों एवं अंधविश्वास पर आधारित अनुभवों पर ध्यान केंद्रित करते हुए शिक्षा के माध्यम से उन्हें दूर कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण विकसित करने पर ज़ोर देता है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें कि यह अंक आपको कैसा लगा। साथ ही, आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख एवं शोध पत्र प्रकाशन हेतु भेजेंगे। आप अपने लेख एवं शोध पत्र हमें ई-मेल journals.ncert.dte@gmail.com पर भी भेज सकते हैं।

अकादमिक संपादकीय समिति

पत्रिका के बारे में

भारतीय आधुनिक शिक्षा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की एक त्रैमासिक पत्रिका है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है शिक्षाविदों, शैक्षिक प्रशासकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, शिक्षकों, शोधकों एवं विद्यार्थी-शिक्षकों को एक मंच प्रदान करना। शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा के विभिन्न आयामों, जैसे — बाल्यावस्था में विकास, समकालीन भारत एवं शिक्षा, शिक्षा में दार्शनिक एवं सामाजिक परिप्रेक्ष्य, ज्ञान के आधार एवं पाठ्यचर्या, अधिगम का आकलन, अधिगम एवं शिक्षण, समाज एवं विद्यालय के संदर्भ में जेंडर, समावेशी शिक्षा, शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा हेतु आई.सी.टी. में नवीन विकास, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा का स्वरूप, विभिन्न राज्यों में शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा की स्थिति पर मौलिक एवं आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करना तथा शिक्षा एवं शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार एवं विकास को बढ़ावा देना। लेखकों द्वारा भेजे गए सभी लेख, शोध-पत्र आदि का प्रकाशन करने से पूर्व संबंधित लेख, शोध-पत्र आदि का समकक्ष विद्वानों द्वारा पूर्ण निष्पक्षतापूर्वक पुनरीक्षण किया जाता है। लेखकों द्वारा व्यक्त किए गए विचार उनके अपने हैं। अत: ये किसी भी प्रकार से परिषद् की नीतियों को प्रस्तुत नहीं करते, इसलिए इस संबंध में परिषद् का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

© 2018. पत्रिका में प्रकाशित लेखों का रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित है, परिषद् की पूर्व अनुमति के बिना, लेखों का पुनर्मुद्रण किसी भी रूप में मान्य नहीं होगा।

सलाहकार समिति

निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. : हृषिकेश सेनापति

अध्यक्ष, अ.शि.वि. : राजरानी

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : एम. सिराज अनवर

संपादकीय समिति

अकादमिक संपादक : जितेन्द्र कुमार पाटीदार

मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल

अन्य सदस्य

राजरानी, रंजना अरोड़ा

उषा शर्मा, मधुलिका एस. पटेल

बी.पी. भारद्वाज

प्रकाशन मंडल

मुख्य व्यापार प्रबंधक : गौतम गांगुली

मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा

उत्पादन सहायक : मुकेश गौड़

आवरण

अमित श्रीवास्तव

हमारे कार्यालय

प्रकाशन प्रभाग

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस

श्री अरविंद मार्ग

नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फ़ीट रोड

होस्केरे हल्ली एक्सटेंशन

बनाशंकरी III स्टेज

बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन

डाकघर नवजीवन

अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी. डब्ल्यू. सी. कैंपस

धनकल बस स्टॉप के सामने

पनिहटी

कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी. डब्ल्यू. सी. कॉम्प्लैक्स

मालीगाँव

गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

मूल्य

एक प्रति : ₹ 50 वार्षिक : ₹ 200

Cover 2nd & 3rd.indd All Pages